JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"सरगुजा जिले में सतत पर्यटन विकास के स्थानिक संभावनाओं एवं चुनौतियों का भौगोलिक मूल्यांकन"

डॉ. एस. एम. प्रजापति
सहायक प्राध्यापक, भूगोल
शास. नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुढ़ार

बृज लाल पनिका
शोधार्थी, भूगोल विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा

सारांश

छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित सरगुजा जिला अपनी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति, छोटा नागपुर पठार के पश्चिमी विस्तार, सघन वन आच्छादित पहाडियां, समृद्ध जैव विविधता और पुरातन किला, राष्ट्रीय उद्यान, ऐतिहासिक गुफाएं, जल प्रपात, लाख कुटीर उद्योग, कोयलांचल क्षेत्र एवं प्राचीन जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के कारण पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक पर्यटन के लिए एक अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सरगुजा जिले में उपलब्ध विविध पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक मूल्यांकन करना, वर्तमान ढांचागत विकास का विश्लेषण करना और अनियंत्रित पर्यटन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को रेखांकित करना है। शोध में पाया गया है कि पर्यटन के अनियोजित विकास के कारण मैनपाट जैसे संवेदनशील पठारी क्षेत्रों में पर्यावरणीय संतुलन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अतः यह शोध पत्र क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास के लिए सतत पर्यटन मॉडल और वहन क्षमता आधारित रणनीतियों की सिफारिश करता है ताकि पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्दः–

सतत पर्यटन, सरगुजा जिला, भौगोलिक मूल्यांकन, पारिस्थितिकी तंत्र, मैनपाट, वहन क्षमता, जनजातीय संस्कृति।

1. प्रस्तावना

पर्यटन आज के समय में विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक है। क्योंकि इससे देश की अर्थव्यस्था को गति देने व देश में बेरोजगारी जैसे समस्या ंव सतत पर्यटन के साथ पर्यावरणीय संरक्षण के निदान करने में प्रयुक्त किया जा रहा है। भौगोलिक दृष्टिकोण से पर्यटन न केवल किसी क्षेत्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग करता है, बल्कि वहाँ के स्थानिक परिदृश्य को भी परिवर्तित करता है। आज न केवल बल्कि सम्पूर्ण विश्व की नजर पर्यटन उद्योग को विकसित करने में लगी हुई है। ऐसे में भारत के मध्यवर्ती भाग में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य अपने नैसर्गिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, जिसमें सरगुजा जिला एक विशिष्ट स्थान रखता है। विंध्याचल और छोटा नागपुर पठार की पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित यह जिला अपने ठंडे मौसम, अद्वितीय जलप्रपातों, प्राचीन गुफाओं और जीवंत लोक कलाओं के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है।

परंतु, जब किसी पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में पर्यटन का विकास बिना किसी ठोस भौगोलिक और पर्यावरणीय योजना के होता है, तो वह लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक संकट का कारण बन जाता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध में सतत पर्यटन को मूल आधार बनाया गया है। सतत पर्यटन से तात्पर्य ऐसे पर्यटन विकास से है जो वर्तमान पर्यटकों और स्थानीय निवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ भविष्य के अवसरों की रक्षा और संवर्धन करता है। साथ ही पर्यावरणीय संरक्षण में अहम योगदान रहा है।

2. अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्यः–

सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है। जिसका भौगोलिक स्थिति 23°37′25 उत्तर अक्षांश से 24°06′17 उत्तरी अक्षांश तक एवं 81°34′40 पूर्व से 84°04′40 पूर्वी देशांतर के बीच फैला हुआ है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अंश पत्रक सख्या 63P, 64I, 64J, 64M एवं 63A के अंतर्गत विस्तृत है। मानचित्र क्रमांक 1.2, इसका पूर्व से पश्चिम तक 244.62 किमी. ल. एवं उत्तर से दक्षिण 67.37 किमी0 चौड़ी इस भूमि का क्षेत्रफल लगभग 5732 वर्ग किमी0 है। जिले की भौगोलिक विशेषताएं निम्नानुसार हैं–

उच्चावचः–सरगुजा जिला विंध्याचल पर्वत श्रेणी और छोटा नागपुर पठार के संगम पर स्थित है। यहाँ की स्थलाकृति में ऊंचे पठार (जिन्हें स्थानीय भाषा में टश कहा जाता है), पहाड़ियाँ और संकीर्ण घाटियाँ शामिल हैं। मैनपाट (1,152 मीटर) और सामरीपाट इस क्षेत्र के प्रमुख उच्च भू–भाग हैं।

जलवायु:–पठारी और पहाड़ी अवस्थिति के कारण यहाँ की जलवायु उप–आर्द्र महाद्वीपीय है। ग्रीष्मकाल में मौसम मध्यम और शीतकाल में अत्यंत ठंडा रहता है। मैनपाट को अपनी ठंडी जलवायु के कारण छत्तीसगढ़ का शिमला भी कहा जाता है, जहाँ शीतकाल में तापमान कभी–कभी न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाता है।

अपवाह तंत्रः–सरगुजा जिला रिहन्द, कन्हाड़, मांड और महानदी अपवाह तंत्र का हिस्सा है। ये नदियाँ पहाड़ी ढालों से उतरते समय कई अत्यंत सुंदर और गहरे जलप्रपातों का निर्माण करती हैं, जो प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं।

वनस्पति एवं मृदाः– जिले का एक बड़ा भू–भाग सघन वनों से ढका हुआ है, जिसमें साल, सागौन और मिश्रित वन पाए जाते हैं। इन वनों में विभिन्न प्रकार के वन्यजीव और दुर्लभ जड़ी–बूटियाँ पाई जाती हैं, जो ईको–टूरिज्म के लिए आदर्श हैं।

3. अध्ययन का उद्देश्यः–

भारत के मध्यवर्ती भाग में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य अपने नैसर्गिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, जिसमें सरगुजा जिला एक विशिष्ट स्थान रखता है। विंध्याचल और छोटा नागपुर पठार की पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित यह जिला अपने ठंडे मौसम, अद्वितीय जलप्रपातों, प्राचीन गुफाओं और जीवंत लोक कलाओं के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। परंतु, जब किसी पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में पर्यटन का विकास बिना किसी ठोस भौगोलिक और पर्यावरणीय योजना के होता है, तो वह लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक संकट का कारण बन जाता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध में सतत पर्यटन को मूल आधार बनाया गया है। सतत पर्यटन से तात्पर्य ऐसे पर्यटन विकास से है जो वर्तमान पर्यटकों और स्थानीय निवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ भविष्य के अवसरों की रक्षा और संवर्धन करता है।

4. परिकल्पनाः–

➢सरगुजा जिले में प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों में दिन–प्रतिदिन पर्यटन गतिविधियों का विस्तार हो रहा है।

➢पर्यटको के आगमन से यहाँ का पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

➢भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण सरगुजा जिले में विभिन्न प्रकार के पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएं मौजूद है।

➢जब किसी परिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में पर्यटन का विकास बिना किसी ठोस भौगोलिक और पर्यावरणीय योजना के होता है। तो वह लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक संकट का कारण बन जाता है।

5. ऑकड़ो का एकत्रीकरण एवं विधि तंत्रः–

अध्ययन क्षेत्र सरगुजा जिले के चयनित पर्यटन स्थलों पर किए गए क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक ऑकडें संकलित किए गए हैं। पर्यटकों तथा स्थानीय निवासियों से मिली जानकारी को, जनगणना, पर्यटन विभाग, जिला प्रशासन तथा उपलब्ध प्रामाणिक अभिलेखों से प्राप्त द्वितीयक ऑकडों के साथ समेकित किया गया। प्राप्त तथ्यों को व्यवास्थित रूप से वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध कर, प्रतिशत, औसत तथा तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से उनकी व्याख्या की गई। पर्यटन की स्थिति को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक आर्कषण, परिवहन सुविधा, आधारभूत संरचना, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और पर्यावरणीय दशाओं जैसे पहलुओं के आधार पर परखा गया। इन सभी कारकों के समग्र अध्ययन के आधार पर जिले में सतत पर्यटन की विकास क्षमता तथा उससे जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का भौगोलिक आंकलन किया गया।

6. पर्यटन विकास की संभावनाएंः–

भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण सरगुजा जिले में विभिन्न प्रकार के पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। इन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

6.1 प्राकृतिक एवं पारिस्थितिकीय पर्यटनः–

सरगुजा जिले के पूर्वी, उत्तर–पूर्वी एवं दक्षिण–पूर्वी सीमा पर विभिन्न पहाड़ियाँ एवं पाट अर्धचन्द्राकार रूप में फैले हुए हैं। जो जैव विविधता एवं खनिज संसाधनों से समृद्व हैं। इन्हें निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

मैनपाट अद्वितीय भौगोलिक संरचना व प्राकृतिक सौदार्य के कारण इसे छत्तीसगढ़ का शिमला कहा जाता है। यह एक विशाल पठार है जहाँ उल्टा पानी (जहाँ पानी गुरुत्वाकर्षण के विपरीत ऊपर की ओर बहता प्रतीत होता है) और दलदली भूमि (बाउंसिंग लैंड, जहाँ पैर रखने पर धरती हिलती है) जैसे अद्वितीय भौगोलिक विस्मय मौजूद हैं। इसके अलावा फिश प्वाइंट और टाइगर प्वाइंट, मेता प्वाइंट, सरभंजा जलप्रपात यहाँ के प्रमुख प्राकृतिक आकर्षण के केन्द्र हैं।

जलप्रपात एवं भू–आकृतिक स्थल जिले में रक्सगंडा, तातापानी (गर्म पानी का फव्वारा, जो भू–तापीय ऊर्जा का स्रोत है) और कुदरगढ़ के पहाड़ी दृश्य प्राकृतिक प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं।

जारंग पाटः–यह पाट जिले के पूर्वी भाग में स्थित है। जो रायगढ़ जिले में फैले पन्डरा पाट की उत्त–पश्चिमी शाखा है। इस पाट प्रदेश की प्रमुख नदी कान्हन नदी है। जो इस क्षेत्र में प्रवाहित होते हुए अनेक छोटे–बड़े जल–प्रपात की रचना करती है।

सामरी पाटः–यह क्षेत्र नदियों के शीर्ष अपरदन से काफी विच्छेदित हो चुका है। इसी पाट प्रदेश में छत्तीसगढ़ राज्य की सबसे ऊँची चोटी गौरी लाटा 1225 मी. स्थित है।

6.2 ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पर्यटनः–

रामगढ़ की पहाड़ियाः–ऐतिहासिक दृष्ट्रि से यह सरगुजा का सबसे महत्वपूर्ण स्थल है। मान्यता है कि महाकवि कालिदास ने यहीं पर अपने प्रसिद्ध महाकाव्य **'मेघदूतम'** की रचना की थी।

जोगीमारा गुफाः–रामगढ़ की पहाड़ियों में स्थित यह गुफा मौर्यकालीन (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) मानी जाती है। इसमें पाए गए भित्तिचित्रों को विश्व के सबसे प्राचीन भित्तिचित्रों में गिना जाता है, साथ ही यहाँ ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख देखने को मिलता हैं।

सीता बेंगरा गुफाः–सरगुजा जिले के यह जोगीमारा के समीप ही स्थित है और इसे भारत की ही नहीं, बल्कि विश्व की प्राचीनतम रंगशाला या नाट्यशाला माना जाता है। यह पुरातत्व और वास्तुकला के छात्रों के लिए अत्यधिक शोध का विषय है।

कैलाश गुफाः–अम्बिकापुर नगर से पूर्व दिशा में 60 किमी. पर स्थित सामरबार नामक स्थान है, जहाँ पर प्राकृतिक वन संपदा के बीच कैलाश गुफा स्थित है जो संत रामेश्वरम गहिरा गुरू का तपो स्थल रहा है।

6.3 सांस्कृतिक, धार्मिक एवं स्थानिक पर्यटन :–

तिब्बती बौद्धः–संस्कृति वर्ष 1962 में चीन के आक्रमण के बाद तिब्बती शरणार्थियों को सरगुंजा के मैनपाट में बसाया गया था। वर्तमान में यह क्षेत्र केंद्रीय बौद्ध संस्कृति और तिब्बती हस्तशिल्प (कालीन उद्योग) का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाता है।

धार्मिक स्थलः–जिला मुख्यालय अम्बिकापुर में स्थित महामाया मंदिर (सिद्ध शक्तिपीठ), कुदरगढ़ की मां बागेश्वरी देवी मंदिर और डिपाडीह के पुरातात्विक मंदिर अवशेष (धार्मिक और ऐतिहासिक संगम) प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं।

जनजातीय संस्कृति एवं लोक कलाः–सरगुजा में कोरवा, गोंड, उरांव और पंडो जैसी प्राचीन जनजातियाँ निवास करती हैं। उनकी अनूठी जीवनशैली, करमा और सुआ नृत्य, हस्तशिल्प (जैसे ढोकरा कला और मिट्टी के बर्तन) स्थानिक टूरिज्म के विकास का मजबूती आधार प्रदान करती हैं।

7. पर्यटन विकास के मार्ग में प्रमुख चुनौतियाँः–

यद्यपि सरगुजा में संभावनाएँ प्रचुर हैं, परंतु एक व्यवस्थित भौगोलिक मूल्यांकन के माध्यम से निम्नलिखित गंभीर चुनौतियाँ और बाधाएँ सामने आई हैं

7.1 **बुनियादी और ढांचागत सुविधाओं का अभावः**—सुदूर क्षेत्रों में स्थित पर्यटन स्थलों (जैसे विशिष्ट जलप्रपात और गुफाएं) तक पहुँचने के लिए बारहमासी पक्की सड़कों की कमी है। अम्बिकापुर में हवाई पट्टी (दरिमा) होने के बावजूद बड़े शहरों से नियमित वाणिज्यिक हवाई संपर्क सीमित है, जिससे उच्च वर्ग के और अंतरराष्ट्रीय पर्यटक यहाँ आसानी से नहीं पहुँच पाते।

7.2 **पारिस्थितिकीय क्षरणः**—सरगुजा के मैनपाट जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटकों की संख्या में अचानक हुई वृद्धि के कारण कंक्रीट के अनियंत्रित होटल और रिसॉर्ट्स का निर्माण बढ़ गया है। वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन न होने के कारण इन सुंदर वादियों में प्लास्टिक कचरा जमा हो रहा है, जिससे स्थानीय मृदा और जल स्रोत निरंतर प्रदूषित हो रहे हैं।

7.3 **स्थानीय समुदाय के आर्थिक लाभ का अभावः**—पर्यटन से होने वाली आय का अधिकांश हिस्सा बाहरी बड़े ठेकेदारों, ट्रैवल एजेंसियों और होटल मालिकों के पास चला जाता है। स्थानीय जनजातीय आबादी (जैसे पहाड़ी कोरवा) केवल कम वेतन वाले श्रम तक सीमित रह जाती है, जिससे उनके मन में पर्यटन के प्रति असंतोष पनप रहा है।

7.4 **उचित प्रचार–प्रसार और ब्रांडिंग की कमीः**—राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरगुजा के ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थलों का पर्याप्त विपणन नहीं किया गया है। लोगों को आज भी मैनपाट या रामगढ़ के पुरातात्विक महत्व की पूरी जानकारी नहीं है।

7.5 सुरक्षा एवं संचार संबंधी बाधाएंः—भौगोलिक रूप से कुछ पर्यटन स्थल अत्यधिक दुर्गम और घने जंगलों के बीच स्थित हैं, जहाँ पर्यटकों की सुरक्षा, चिकित्सा सहायता और मोबाइल नेटवर्क कनेक्टिविटी का अभाव देखने को मिला है।

8. सतत पर्यटन का भौगोलिक मूल्यांकन एवं मॉडल

पर्यटन का प्रकार

सतत पर्यटन का तात्पर्य पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना और स्थानीय संस्कृति का आदर करते हुए पर्यटन का आर्थिक लाभ उठाना है। सरगुजा जिले के लिए एक वैज्ञानिक और भौगोलिक सतत पर्यटन मैट्रिक्स नीचे प्रस्तुत की गई है, जो विकास और संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करती है।

पर्यटन का प्रकार	भौगोलिक क्षेत्र	सतत विकास रणनीति
पारिस्थितिकीय	मैनपाट पठार,जलप्रपात क्षेत्र,राष्ट्रीयउद्यान सीमाएं	प्लास्टिक के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध। प्रतिदिन आने वाले पर्यटकों की वहन क्षमता का वैज्ञानिक निर्धारण। कंक्रीट के बड़े होटलों के स्थान पर स्थानीय लकड़ी और मिट्टी से बने पर्यावरण–अनुकूल होमस्टे को बढ़ावा देना।
ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक	रामगढ़ पहाड़ियाँ, गीमारा एवं सीता गरा गुफाएं,	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षणरा रासायनिक और भौतिक संरक्षण।गुफाओं के भीतर मानव गतिविधियों और फ्लैश फोटोग्राफी को नियंत्रित करना।गाइड के रूप में केवल स्थानीय शिक्षित युवाओं को प्रशिक्षित कर नियुक्त करना।
सांस्कृतिक एवं एथनिक	तिब्बतीकैंप (मैनपाट), जनजातीय बहुल ग्रामीण क्षेत्र	एथनिक टूरिज्म विलेजश की स्थापना करना जहाँ पर्यटक जनजातीय जीवनशैली को बिना व्यवधान पहुँचाए अनुभव कर सकें।
धार्मिक एवं आध्यात्मिक	महामाय मंदिर अम्बिकापुर,कुदरग ढ़,तातापानी	धार्मिक मेलों और त्योहारों के दौरान भीड़ प्रबंधन और ठोस कचरा प्रबंधन के लिए कड़े नियम। हरित परिवहन (सौर ऊर्जा संचालित वाहन) का उपयोग बढ़ाना।

9. व्यावहारिक सुझाव एवं नीतिगत अनुशंसाएँः–

9.1 ग्रीन टैक्स का कार्यान्वयनः–सरगुजा जिले के संवेदनशील क्षेत्रों जैसे मैनपाट में पर्यावरण के रख–रखाव के लिए प्रवेश शुल्क या ग्रीन टैक्स लगाया जाना चाहिए, जिसका उपयोग केवल पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के लिए हो।

9.2 **राजस्व का विकेंद्रीकरणः–**पर्यटन से होने वाली कुल आय का एक निश्चित हिस्सा (कम से कम 20 प्रतिशत) सीधे ग्राम पंचायतों को मिलना चाहिए, ताकि वे गाँव के बुनियादी ढांचे और लोक कल्याणकारी योजनाओं का विकास कर सकें। ताकि रोजगार के अवसरों की प्राप्ति हो सके।

9.3 **टूरिस्ट पुलिस एवं सुरक्षा बल की स्थापनाः–**जिले में पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर विशेष टूरिस्ट पुलिस की तैनाती की जानी चाहिए, जो द्विभाषी (स्थानीय और हिंदी, अंग्रेजी) हो।

9.4 **हरित अवसंरचनाः—**सभी सरकारी और निजी होटलों में सौर ऊर्जा, जल संचयन और वैज्ञानिक खाद बनाने वाली प्रणालियों को अनिवार्य किया जाना चाहिए।

9.5 **डिजिटल ब्रांडिंग और विपणनः—**छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड को डिजिटल मीडिया के माध्यम से सरगुजा के ऐतिहासिक और प्राकृतिक महत्व की लघु–वृत्तचित्र बनाकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

10. निष्कर्ष

भौगोलिक मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि सरगुजा जिला प्राकृतिक, पुरातात्विक और सांस्कृतिक संसाधनों का एक अनूठा खजाना है। यहाँ पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ आर्थिक समृद्धि का द्वार खोल सकती हैं, परंतु वर्तमान में व्याप्त ढांचागत कमियाँ और पर्यावरणीय उपेक्षा इस क्षेत्र के भविष्य के लिए गंभीर चुनौती हैं। यदि पर्यटन का वर्तमान अनियोजित स्वरूप जारी रहा, तो मैनपाट जैसी अनमोल पारिस्थितिकी नष्ट हो जाएगी और स्थानीय जनजातीय संस्कृति का व्यवसायीकरण होने से समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

अतः समाधान केवल सतत पर्यटन के व्यावहारिक क्रियान्वयन में निहित है। जब तक पर्यावरण संरक्षण, वहन क्षमता के नियम और स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता को नीतिगत निर्णयों में प्राथमिक स्थान नहीं दिया जाएगा, तब तक पर्यटन का विकास स्थायी नहीं हो सकता। सरकार, स्थानीय प्रशासन, गैर–सरकारी संगठनों और पर्यटकों के सामूहिक प्रयासों से ही सरगुजा को मध्य भारत के एक आदर्श सतत पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

11. संदर्भ ग्रंथ सूचीः—

- सिंह, समरबहादुर, सरगुजा का ऐतिहासिक पृष्ठ भारत प्रिंटिंग प्रेस अम्बिकापुर(सरगुजा) 2002.
- वर्मा, डॉ. कमला प्रसाद, छत्तीसगढ़ की स्थापत्य कला (सरगुजा जिले के विशेष सन्दर्भ में) संचानलय पुरातत्व एवं सांस्कृतिक रायपुर छत्तीसगढ़ 2010.
- डॉ., एन. के. बघमार एवं कुजूर अरोड़ा, सरगुजा जिले में अनुसूचित जन जातियों की जीवन की गुणवत्ता का आलोचनात्मक विश्लेषण, प. रवि शंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छत्तीसगढ़ 2019.
- कुमार, डॉ. सतीश (2021) छत्तीसगढ़ का भूगोल एवं जनजातीय संस्कृति, हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर।
- शर्मा, आर. के. एवं मिश्रा, पी. (2019) सतत पर्यटन विकास एवं पर्यावरणीय प्रभाव, भौगोलिक समीक्षा पत्रिका, अंक 24, पृष्ठ 45–58।

- Chhattisgarh Tourism Board (2023). Annual Tourism Report and Statistical Highlights (Department of Tourism) Government of Chhattisgarh.
- Singh, Landge et al. (2022). Ecotourism in Tribal Areas: Opportunities and Spatial Challenges, International Journal of Geographic Studies, Vol- 12. P.112-125.
- पर्यटन भूगोल एक अध्ययन 2021 निराला प्रकाशन नई दिल्ली।
- व्यास, डॉ0 राजेश कुमार, 2023, पर्यटन उदभव एवं विकास, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- दीक्षित, के0 के0 एवं गुप्ता जे. पी. 2003, पर्यटक के विविध आयम, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।
- ग्रेवाल, पी. एस. 1990, सांख्यिकीय विश्लेषण की विधियाँ, स्टार लिंग प्रब्लिशन नई दिल्ली।
- शर्मा, अतुल, 2012, आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान, इशिका पब्लिकेशन हाउस जयपुर।
- वार्षिक रिर्पोट पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार वर्ष 2021–22, 2022–23, 2023–24, 2024–25, 2025–26.
- जिला पर्यटन कार्यालय सरगुजा छत्तीसगढ़.